Volume 2; Issue 4
October to December 2025
E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika
संस्कृति-संवाहिका

Peer Reviewed Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 2; Issue 4; October to December, 2025; Page No. 21-29

Peer Reviewed, Indexed and Refereed Journal

ज्योतिष शास्त्र में निहित मुहूर्त (श्राद्ध के परिप्रेक्ष्य में)

डॉक्टर अंजली उपाध्याय

असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)

दयानंद आर्य कन्या डिग्री कॉलेज मुरादाबाद

E.mail -anjaliupadhyay653@gmail.com

शोध सार

श्राद्ध भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान है, जिसे पितृ तर्पण के रूप में पूर्वजों की आत्मा की शांति और आशीर्वाद के लिए संपन्न किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र में श्राद्ध के मुहूर्त का विशेष महत्व हैं, क्योंकि इससे अनुष्ठान का आध्यात्मिक प्रभाव और फल अधिकतम होता है। इस शोध में तिथि, वार, नक्षत्र, योग करण और काल के आधार पर श्राद्ध मुहूर्त का विश्लेषण किया गया है प्राचीन ग्रंथो के अनुसार अपराह्न काल और पितृपक्ष की अमावस्या को सर्वोत्तम मुहूर्त माना गया है। आधुनिक संदर्भ में श्राद्ध केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक संरचना का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। श्रद्धा मुहूर्त का अध्ययन धार्मिक आस्था ज्योतिषी ज्ञान और सांस्कृतिक परंपरा के संयोजन के रूप में किया जाना चाहिए।

***बीज शब्द**: श्राद्ध, मुहूर्त, पितृ तर्पण, ज्योतिष शास्त्र, नक्षत्र, तिथि, योग, अंत्येष्टि, प्रतिमास सूक्ष्म शरीर पंचांग।*

यह ध्रुव सत्य है कि जीवन का अवसान मृत्यु से ही होता है। मृत्योपरान्त जीवात्मा शरीर को छोड़कर सूक्ष्म रूप में विचरण करता है। सामान्य मनुष्य अपने चर्मचक्षुओं से इस सूक्ष्म शरीर को नहीं देख सकता हैं। यही जीवात्मा (सूक्ष्म शरीर) अपने संचित कर्म फल को प्राप्त करने के लिए एक अंगुष्ठपर्व परिमित अतींद्रिय शरीर धारण करता है जैसा कि स्कंद पुराण में कहा गया है-

"तत्क्षणात् सोऽथ गृह्णाति शारीरं चातिवाहिकम्।

अंगुष्ठपर्वमात्रं तु प्राणैरेव निर्मितम्।।"[1]

यह सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से अलग होता है। ब्रह्म स्वरूप में कहा गया हैं कि-

"वाखग्रसारी तद्रूपम् देहमन्यत् प्रपद्यते।

तदकर्मयातनार्थे च न मातृपितृसम्भवम्।।"[2]

इसी प्रकार श्वेताश्वेतरोपनिषद में भी कहा गया हैं – "बाल के नाक के सौंवे भाग के पुनः सौ भाग में कल्पना किए जाने पर जो एक भाग होता है वही जीवात्मा का स्वरूप समझना चाहिए और वह असीम भाव वाला होने में समर्थ है।"[3]

इस सूक्ष्म शरीर से जीवात्मा अपने द्वारा फिर हुए धर्म और अधर्म के परिणाम स्वरुप सुख- दुख को भोगता है, जैसा कि **विष्णुधर्मोत्तर पुराण** में कहा गया है-

"मनुष्याः प्रतिपद्यन्ते स्वर्गम् नरकमेव वा।

नैतान्ये पातिनः केचित् सर्वं ते फलभोगिनः।।

शुभानामशुभानां वा कर्मणां भृगुनन्दन।

सञ्जनः क्रियते लोके मनुष्यैरेते केवलम्।

तस्मान् मनुष्यस्तु मृतो यमलोकं प्रपद्यते।

नान्यः प्राणी महाभाग फलयोनौ व्यवस्थितः।।[4]

इसीलिए हमारे सनातन शास्त्रों में मृत्यु का स्वरूप, मरणासन्न व्यक्ति की अवस्था और उसके कल्याण के लिए अंतिम समय में किए जाने वाले अनेक कृत्यों जैसे विभिन्न प्रकार के दान के साथ ही और्ध्वदैहिक संस्कार, पिंडदान, तर्पण, श्राद्ध एकादसाह, सपिंडीकरण, अशौचादि निर्णय, कर्मनिष्ठ, पापों के प्रायश्चित का विधान वर्णित है।

कोई भी कर्मकांड जब तक विधि विधान और निश्चित मुहूर्त में नहीं किया जाए तब तक वह फलदाई नहीं होता है।

प्राणी के पृथ्वी लोक से गमन के पश्चात् पारलौकिक जीवन को सुख समृद्धि एवं शांति में बनाने हेतु मृत्यु के उपरांत उस प्राणी के उद्धार के लिए पुत्र - पौत्रादि के द्वारा किए जाने वाले कृत्य को ही श्राद्ध कहते हैं। नरक से जो रक्षा करें वही पुत्र है " **पून्नामनरकात् त्रायते इति पुत्रः।"**

अतः पुत्र पौत्रादि का यह परम कर्तव्य है कि वे अपने माता-पिता तथा पूर्वजों के निमित्त श्रद्धा पूर्वक शास्त्रोक्त कर्म करें जिससे उन मृत प्राणियों को परलोक में अथवा अन्य योनियों में सुख की प्राप्ति हो सके।

पितृऋण से मुक्त होने के लिए भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म में अपने माता-पिता तथा परिवार के मृत प्राणियों के निमित्त श्राद्ध करने की अनिवार्य आवश्यकता कही गई है। दान, पूजन, तर्पण पिंडदान आदि समस्त कार्य जो पितरों एवं प्रेतों के निमित्त किए जाते हैं, वही श्राद्ध पद वाच्य है।

"श्रद्धया पितृन उद्दिश्य विधिना क्रियते यत्कर्म तत् श्राद्धम्।"

श्राद्ध शब्द की व्युत्पत्ति ' श्रद् अणताप धातु' से 'अण् प्रत्यय' के योग से निष्पन होता हैं। जिसका शाब्दिक अर्थ सत्य, वास्तविकता आदि हैं। धा का अर्थ है धारण करना।अतःश्राद्ध मे श्रद्धा की भावना मुख्य है। श्राद्ध मूलतः स्मृतिकारों द्वारा स्वीकृत एक प्रकार का संस्कार है, जो जीवित वंशजो द्वारा दिवंगत पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए किया जाता है।[5] विभिन्न शास्त्रों में श्राद्ध की विभिन्न प्रकार से परिभाषा दी गई है। महर्षि पराशर ऋषि कहते हैं- "देश, काल तथा पात्र मे हविष्यादि विधि द्वारा जो कर्म तिल और दर्भ तथा मन्त्रों से युक्त होकर श्रद्धापूर्वक किया जाए वही श्राद्ध है।"[6]

ब्रह्म पुराण के अनुसार- 'देश काल पात्र में विधिपूर्वक श्रद्धा से पितरों के उद्देश्य से जो ब्राह्मण को दिया जाए उसे श्राद्ध कहते हैं।[7]

महर्षि बृहस्पति और पलुस्त्य के अनुसार - "जिस कर्म विशेष में दुग्ध, घृत और मधु से युक्त सुसंस्कृत उत्तम व्यंजन को श्रद्धापूर्वक पितृगण के उद्देश्य से ब्रह्मणादि को प्रदान किया जाए उसे श्राद्ध कहते हैं।"[8]

हमारे पूर्वजों एवं किसी भी मृत प्राणी की कल्याण की कामना से किया गया तर्पण पिण्डादि दान ही श्राद्ध के रूप में पितरों को प्राप्त होता है। इसी श्राद्ध कर्म से जीव का उत्कर्ष होता है। श्रद्धा के पुण्य प्रभाव से ही जीवों की नरक से मुक्ति मिलती है।

श्राद्ध श्राद्धकर्ता के लिए भी विशेष फलदाई होता है। जैसा कि कहा गया है- कि 'जो प्राणी विधि पूर्वक शांतमन होकर श्राद्ध करता है वह सभी पापों से रहित होकर मृत्यु को प्राप्त होता है तथा फिर संसार चक्र में नहीं आता है।'[9]

इसके अतिरिक्त भी श्राद्ध अपने अनुष्ठान कर्ता की आयु को बढ़ा देता है, पुत्र प्रदान कर कुल परंपरा को अक्षुण्ण रखता है, धन-धान्य का अंबार लगा देता है, शरीर में बल पौरुष का संचार करता है, पुष्टि प्रदान करता है और यश का विस्तार करते हुए सभी प्रकार के सुख प्रदान करता है।[10] श्राद्ध से संतुष्ट होकर पितृगण श्राद्धकर्ता को दीर्घ आयु, संतति, धन, विद्या, राज्य- सुख, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करते हैं।

श्राद्ध के 12 प्रकार होते हैं जो इस प्रकार है [11]–

1. **नित्य श्राद्ध**- नित्य प्रतिदिन किए जाने वाले श्राद्ध को नित्य श्राद्ध कहते हैं।
2. **नैमित्तिक श्राद्ध**- वार्षिक तिथि को किए जाने वाले श्राद्ध को नैमित्तिक श्राद्ध कहते हैं।
3. **काम्य श्राद्ध**- किसी कामना के लिए किए जाने वाले श्राद्ध को काम्य श्राद्ध कहते हैं।
4. **नान्दी श्राद्ध**- किसी मांगलिक अवसर पर किए जाने वाले श्राद्ध को नान्दी श्राद्ध कहते हैं।
5. **पार्वण श्राद्ध**- पितृ पक्ष, अमावस्या तिथि आदि पर किए जाने वाले श्रद्धा को पार्वण श्राद्ध कहते हैं।
6. **सपिण्डन श्राद्ध**- त्रिवार्षिक श्राद्ध जिसमें प्रेत पिण्ड का पितृपिण्ड से सम्मिलन होता है। उसे सपिण्डन श्राद्ध कहते है।
7. **गोष्ठी श्राद्ध**- पारिवारिक या स्वजातीय समूह में जो श्राद्ध किया जाता है उसे गोष्ठी श्राद्ध कहते हैं।
8. **शुद्धर्यघ श्राद्ध**- शुद्धि हेतु जो श्राद्ध किया जाता है उसे शुद्धर्यघ श्राद्ध कहते हैं। इसमें ब्राह्मण भोज आवश्यक है।
9. **कर्माङ्ग श्राद्ध**- षोडश संस्कारों के निमित्त जो श्राद्ध किया जाता है उसे कर्माङ्ग श्राद्ध कहते हैं।
10. **दैविक श्राद्ध**- देवताओं के निमित्त जो श्राद्ध किया जाता है उसे दैविक श्राद्ध कहते हैं।
11. **यात्रार्थ श्राद्ध**- तीर्थ स्थानों पर किया गया श्राद्ध यात्रार्थ श्राद्ध कहलाता हैं।
12. **पुष्ट्यर्थ श्राद्ध** - स्वयं एवं पारिवारिक सुख समृद्धि एवं उन्नति के लिए जो श्राद्ध किया जाता है उसे पुष्ट्यर्थ श्राद्ध कहते हैं।

मत्स्यपुराण पुराण में इन 12 प्रकार के श्राद्धों का अन्तर्भाव नित्य नैमित्तिक एवं काम्य श्राद्ध में किया जाता है। " नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं श्राद्ध मुच्यते।"[12]

कर्मकांड में तो अंत्येष्टि के प्रारंभ से लेकर मालिन मध्यम एवं उत्तमषोडषी, सपिंडीकरण तथा वार्षिक श्राद्ध और प्रतिमास में करने के अभाव में अपकर्षणपूर्वक किए जाने वाले श्रद्धा की दीर्घ सूची है।

इन समस्त श्राद्धो का अनुष्ठान सद् गृहस्थों के द्वारा किया जाता हैं। आधिभौतिक, आध्यात्मिक तथा आधिदैविक आपदाओं से ग्रस्त होने पर त्रिविध तापों से संतप्त मनुष्यों को शांति के लिए त्रिपिंडी, गया श्राद्ध आदि के विशेष अनुष्ठानों का प्रचलन अनादि काल से होता हुआ आज भी संप्रदाय अनुसार कुछ देशभेद वा गृहसूत्राधारित पद भेद से समस्त आस्तिक सनातनियों में विद्यमान है। पितृ शांति एवं प्रेतत्व से मुक्ति और्ध्वदैहिक श्राद्ध पिंड, दान, तर्पण, हवन, ब्राह्मण भोजनादि क्रिया को विधिवत संपादित करने से प्राप्त होती है।

विष्णु पुराण में तृतीय अंश के अध्याय 15 श्लोक-55, 56 में वर्णित है कि 'हे राजन श्राद्ध करने वाले पुरुष से पितृगण, विश्वेदेव गण आदि सर्व संतुष्ट हो जाते हैं।हे भूपाल पितरगण का आधार चंद्रमा है और चंद्रमा का आधार योग है इसलिए श्राद्ध में योगी जन को अवश्य बुलाएं यदि श्राद्ध में एक भी ब्राह्मण भोजन कर रहे हो उसके सामने एक योगी भी हो तो उन एक हजार ब्राह्मणों का उद्धार कर देता है।' श्राद्ध पुत्रों के द्वारा किया जाता है परंतु गौतम धर्म सूत्र में कहा गया है कि पुत्रों के अभाव में सपिंड लोग या माता के सपिंड लोग एवं शिष्य जन श्राद्ध कर्म कर सकते हैं, अगर यह भी नहीं है तो कुल पुरोहित एवं आचार्य श्राद्ध कर सकते हैं।

इसी प्रकार 'स्मृति संग्रह श्राद्ध संग्रह' में कहा गया है कि पिता का श्राद्ध करने का अधिकार मुख्य रूप से पुत्र को ही है। कई पुत्र होने पर अंत्येष्टि से लेकर एकादशाह तथा द्वादशाह तक की सभी क्रियाएं जेष्ठ पुत्र को करनी चाहिए। विशेष परिस्थिति में बड़े भाई की आज्ञा से छोटा भाई भी कर सकता है। यदि सभी भाइयों का संयुक्त परिवार हो तो वार्षिक श्राद्ध भी ज्येष्ठ पुत्र के द्वारा एक ही जगह संपन्न हो सकता है। यदि पुत्र अलग-अलग रहते हो तो उन्हें वार्षिक श्राद्ध अलग-अलग करना चाहिए।[13]

पितरों के लिए किए गए श्राद्ध में प्रत्येक वस्तु , नक्षत्र, समय (मुहूर्त) का विशेष महत्व है। अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, धनिष्ठा, उत्तराषाढा, श्रवण, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, विशाखा, इत्यादि नक्षत्रों की उपस्थिति मे यह श्राद्ध अलग-अलग समय पर किया जा सकता हैं।[14] इसके अतिरिक्त कुछ अन्य नक्षत्र आद्रा, भाद्रपद

इत्यादि भी हैं जिनका श्राद्ध मे पालन नही किया जाता हैं।[15] पितर के निमित्त किए गए श्राद्ध में काक, गौ, श्वान, पिपीलिका व देवस्वरूप ब्राह्मण को भोजन कराने का विधान है।

पितरों को भोजन अर्पित करने के लिए अग्नि में भोज्य पदार्थों की आहुति दी जाती है जिसे धूप डालना कहते हैं। इस धूप का विशेष समय निर्धारित है जिसे कुतप काल कहा जाता है। कुतप काल में किया गया तर्पण एवं दी गई धूप का फल अक्षम होता है। यद्यपि शास्त्रों में आठ प्रकार के कुतप के बारे में बताया गया है, तथापि श्रद्धा के योग्य कुतप काल में रहने वाली तिथि में ही श्राद्ध कर्म संपादित करना चाहिए।

पितृयज्ञ श्रद्धा के संपूर्ण फल प्राप्ति के लिए मध्याह्नव्यापिनी कुतप काल मे ही श्राद्ध करना चाहिए ।उदाहरण स्वरूप यदि किसी प्रेत की श्राद्ध तिथि सप्तमी तिथि है और सप्तमी सूर्योदय से मानने पर तीन घंटा की ही है। यदि हम सूर्योदय का समय 6:00 बजे मान ले तो सप्तमी तिथि 3 घंटे बाद तक अर्थात 9:00 तक ही रहेगी उसके बाद अष्टमी तिथि का प्रवेश हो जाएगा। श्राद्ध सप्तमी तिथि का है अब इसके पूर्व तिथि षष्ठी का समापन 10:00 बजे के आसपास होकर मध्याह्न कुतप में यदि पूर्व दिन में सप्तमी का मान आ जाता है तो श्राद्ध औदयिकी सप्तमी में न होकर उसके पूर्व षष्ठी युक्त कुतपकालव्यापिनी षष्ठी होगा।इसके समुचित ज्ञान के लिए पंचांगगस्थ तिथ्यादिमान एवं धर्मकृत्योंपयोगी तिथ्यादि निर्णय में ज्योतिषशास्त्र के अतीव मनन, चिंतन की आवश्यकता है।

सूर्य सिद्धांत पद्धति के निमित्त पंचांग एवं उसके निर्धारित तिथ्यादिमान के अंतर्गत किया गया श्राद्ध कर्म फल दाता होता है। कभी-कभी ऐसा होता है की विविध वचन एवं परस्पर विरोधी वाक्य के मिलने से जनसाधारण मनुष्य भ्रम में पड़ जाता है। कुछ व्यक्ति तात्पर्य को भलीभांति समझे बिना ही स्वयं ही कविकल्पित व्यवस्था बना देते हैं, उनके अनुसार निम्न वचनों को आधार बनाकर सप्तमी तिथि को ही श्राद्ध किया जा सकता है-

"यां तिथि समनुप्राप्य उदयं यति भास्करः।

सां तिथिं सकला ज्ञेया दानाध्ययनकर्मसु।।"[16]

परंतु हमें तो श्राद्ध काल कुतप का महत्व समझना है।उदयव्यापिनी तिथि प्रयोगप्राप्त नहीं होने पर अथवा संगव स्पर्श एवं संगवपर्यंत नहीं होने पर भी पूर्व दिन कर लेना प्रशस्त है।

तिथिशुद्धि और पंचांग में स्थित तिथि आदि के संबंध में ज्योतिष शास्त्र एवं धर्मशास्त्र यह निर्देश देता है कि दृकसिद्धांतानुसार यंत्रवत, दूरबीन आदि द्वारा ग्रहण आदि के संबंध में ग्राह्य है, परंतु तिथि आदि के संबंध में अथवा अदृश्य फल स्वर्ग, नरक अथवा प्रेत- पितृ आदि के कर्म में श्रुत्युक्त वाक्य ही श्रेष्ठ है।

श्री व्यास जी के अनुसार -

"यंत्रवेधादिना ज्ञातं यद् बीजम् गणकैस्ततः।

ग्रहणादि परीक्षेत न तिथ्यादि कदाचन्।

अदृश्यफलसिद्ध्यर्थं निर्बीजार्कोत्तमेव हि।

प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यं कर्मानुष्ठानतत्परैः।।"[17]

इत्यादि आर्ष वाक्योंके अनुसार पितृकार्य तथा देव कार्य आदि में धर्मशास्त्रों में कहे हुए कालाकाल की गणना पूर्वक ही विहित काल में किया गया कर्म सफलता देता है।

सूर्यसिद्धांत में प्रशस्त तिथि आदि के विषय में कहा गया है कि -

"तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमधाजहन्तः।

सूर्यांशजोक्तार्षितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुख लभन्ते।।"[18]

अतः शुद्ध कालविहित काल में श्राद्ध आदि से पितृगण प्रसन्न होते हैं। इसके विपरीत दृकतुल्य तिथ्यादि के मान से श्राद्धकाल के निर्धारण करने से पितृशाप, पुण्यक्षय एवं दुर्गति की प्राप्ति होती है।

"दृकसिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति।

केचितिप्पिषु प्रमादात्।

श्राद्धादिकं तात्प्रेतशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति।।"

श्राद्ध से पितरों की तृप्ति होती है और श्राद्ध भंग होने से पितरों का कोप होता है। अतः श्राद्ध के लिए जो मान्य है उसी के अनुसार ही तिथि आदि का भी ग्राह्य एवं अग्राह्य मानना चाहिए।

काल के विभाग से जब हम दिन का विभाग करते हैं तो वह पांच भागों में बॅटा है। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न तथा समाह्न इन पांच भागों में तीसरी मध्याह्नकालव्यापिनी तिथि ज्योतिष द्वारा निर्णीत होने पर श्राद्ध के योग्य होती है। ' यथा दिनद्वयेऽप्यपराह्ण्याप्तौ तु पूर्वेण ग्राह्या।'

अतः श्राद्ध काल में मुहूर्त की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके अतिरिक्त श्राद्ध करते समय शीघ्रता नहीं करनी चाहिए और न ही अनावश्यक विस्तार करना चाहिए। वाक्यभ्रंश होने से पितृगण अप्रसन्न होते हैं।.श्राद्ध करने के पश्चात यात्रा नहीं करनी चाहिए। श्राद्धकर्ता एवं भोक्ता के उदर से श्राद्धान्य भोजन करने से पितृगणों का निवास होता है अतः श्राद्ध भोजनोपरान्त मैथुन करना निषिद्ध है लोहे का दान वर्जित है।

निष्कर्षतः धर्मशास्त्र में कहे गये विधि विधान से ही श्राद्ध कर्म संपन्न करना चाहिए।श्राद्धादि में ज्योतिषशास्त्र की कालविधि का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए।

संदर्भ सूची-

1- स्कन्दपुराण - 1/ 2/50/ 62/

2- ब्रह्मपुराण- 2/4/46/

3- वालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितश्य च।

भागो जीवः स विज्ञये य चानन्त्याय कल्पते।(श्वेताश्वेतरोपनिषद- 5/9)

4- विष्णुधर्मोत्तर- 2/ 113/4-6

5- श्रद्धा नाम अदनीयस्य द्रव्यस्य प्रेतोद्देश्येन श्रद्धा त्यागः। याज्ञवल्क्य स्मृति। 1.10

6- देशे काले च पात्रे च विधिना हविषा च यत्।

तिलैर्दभैश्च मन्त्रैश्च श्राद्धं स्यात् श्रद्धया युतम्।। (कूर्मपुराण)

7- देशे काले च पात्रे च विधिना हविषा च यत्।

पितृनुदिश्य विप्रेभ्यो दतं श्राद्धमुदाहृतम्।।

(ब्रह्मपुराण)

8- संस्कृतं व्यंजनाद्यं च प्यारे धुद्युतान्वितम्।

श्रद्धया दीयते यस्मात् शुद्धं तेन निगद्यते।।(पुलस्त्य स्मृति)

9- योऽनेन विधिनां श्राद्धं कुर्याद् वै शान्तमानसः।

व्यपतकल्मषो नित्यं याति नावर्तते पुनः।।कूर्मपुराण

10- आयुः पुत्रानयशः स्वर्गं कीर्ति पुष्टिं बलं त्रियम्।

पशून् सौख्यं धनं धान्य प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।। (यमस्मृति गरुणपुराण श्राद्ध प्रकाश)

11- इंडिया टीवी, श्राद्ध के प्रकार, प्रकाशित-10 सितंबर 2025 https://www.indiatv.in/religion/news-shradh-ke-prakar-there-are-12-types-of-shraadh-the-tenth-one-makes-you-rich-and-brings-special-blessings-of-the-gods-and-goddesses-2025-09-10-1161655

12- नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वृद्धिश्राद्धं

सपिण्डनम्।

पार्वणं चेति विज्ञेयं गोष्ठी शुद्धयर्थमष्टमम्।

कर्माङ्ग नवमं प्रोक्तं दैविकं दशमं स्मृतम्।

यात्रास्वेकादशं प्रोक्तं पुष्ट्यर्थ द्वादशं स्मृतम्।।भविष्य पुराण

13-पुत्र पौत्रश्च तत्पुत्रः पुत्रिकापुत्र एव च।

पत्नी भ्राता च प्रसवश्च पिता माता स्नुषा तथा।।

भगिनी भागिनेयश्च सपिण्ड सोदकस्तथा ।

असन्निधाने पूर्वेषामुत्तरे पिण्डदाः स्मृताः।। स्मृतिसंग्रह श्राद्ध. कल्प.।

14- अश्विनीरोहिणी पुष्य रेवती उत्तराफाल्गुनी,

धनिष्ठा च उत्तराश्राढा श्रवण मृगशिरा तथा।

हस्त चित्रानुराधा च विशाखा स्वातिरेव च,

पुनर्वास शतभिषा आद्रा भाद्रपद तथा

श्रद्धाधे प्रशस्तन्येतानि नक्षत्राणि शुभानि च।। गंगाजल द्वितीय ,पृष्ठ संख्या - 109- 110

15- निषेधाविधि मध्यस्थ,आक्रामकता,

श्राद्ध एतेषु कर्तव्यं प्रत्यारिं तत्र वर्जयेत। गंगाजल द्वितीय, पृष्ठ संख्या- 110

16- ज्योतिषतत्वांक, जनवरी 2014, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ संख्या 400।

17- ज्योतिषतत्वांक , जनवरी 2014, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ संख्या 400।

18- ज्योतिषतत्वांक , जनवरी 2014, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 401।